ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

सामाजिक उत्तरदायित्व की शिक्षा: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्त्वपूर्ण आयाम

महेश नारायण दीक्षित
आचार्य, शिक्षा संकाय (IASE)
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

सारांश

सामाजिक उत्तरदायित्व एक महत्वपूर्ण शैक्षिक लक्ष्य है, जो विद्यार्थियों में नैतिक जागरूकता, नागरिक सहभागिता, सहानुभूति तथा सामाजिक और पर्यावरणीय कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता पर अवलम्बित होता है। विद्यार्थीयो में सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति जगरूकता एवं प्रतिबद्धता को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बालक के चहुमुखि विकास एवं सामजिक उत्थान के लिये आवश्यक माना गया है। विद्यालयी शिक्षा विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है, जहाँ विद्यार्थी उन्नत संज्ञानात्मक क्षमताएँ, नैतिक तर्कशक्ति तथा सामाजिक चेतना अर्जित करते हैं।

यह प्रपत्र विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व के संबंध में एक वैचारिक एवं नीतिपरक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसंधान में सामाजिक उत्तरदायित्व के अर्थ और आयामों का विवेचन किया गया है, उसके शैक्षिक एवं सामाजिक महत्व की समीक्षा की गई है, तथा उसके विकास हेतु शैक्षणिक एवं संस्थागत रणनीतियों को प्रस्तावित किया गया है।

इसके अतिरिक्त, प्रपत्र यह प्रतिपादित करता है कि सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति बालको मे जगरूपता एवं प्रतिबद्धता के विकास के लिये यह जरूरी है कि इसे केवल अभ्यासक्रम का एक गौण नैतिक उद्देश्य के रूप में न मानकर पाठ्यक्रम, शिक्षण-पद्धति, विद्यालयी संस्कृति तथा मूल्यांकन प्रक्रियाओं में समग्र रूप से अंतर्निहित किया जाना चाहिए।

बीज शब्द : सामाजिक उत्तरदायित्व, विद्यालयी शिक्षा, नागरिक शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।

प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी में शिक्षा से यह अपेक्षा की जाती है कि वह केवल शैक्षणिक उपलब्धियों के लक्ष्य तक सीमित न रहे, बल्कि उत्तरदायी, नैतिक तथा सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध नागरिकों के निर्माण में योगदान दे। तीव्र सामाजिक परिवर्तन, पर्यावरणीय क्षरण, डिजिटल रूपांतरण तथा बढ़ती सामाजिक असमानताएँ ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता उत्पन्न करती हैं जो सामाजिक यथार्थ को समझ सकें और समाज तथा पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारीपूर्वक आचरण कर सकें। इस संदर्भ में, सामाजिक उत्तरदायित्व विद्यालयी शिक्षा की एक प्रमुख क्षमता के रूप में उभर कर सामने आया है।

विद्यालयी शिक्षा का पडाव मानव विकास में एक विशिष्ट स्थान रखता है। उत्तर बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था, वह अवस्था है जिसमें पहचान निर्माण, नैतिक अनुकूलता, भावनात्मक संवेदनशीलता में वृद्धि तथा न्याय और निष्पक्षता के

प्रति बढ़ती आतुरता से चिह्नित होती है (Steinberg, 2014)। बालक की ये विकासात्मक विशेषताएँ विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों को सामाजिक एवं नैतिक अधिगम के अनुभवों के प्रति विशेष रूप से ग्रहणशील बनाती हैं। तथापि, अनेक शैक्षिक व्यवस्थाओं में सामाजिक उत्तरदायित्व को या तो निहित मान लिया जाता है अथवा इसे अलग-थलग नैतिक पाठों तक सीमित कर दिया जाता है। इसे पाठ्यक्रम और शिक्षण-पद्धति में व्यवस्थित रूप से समाहित किया जाने की आवश्यकता पर बहुत ही कम ध्यान दिया जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 भारतीय शिक्षा के लिए एक नवदृष्टि प्रस्तुत करती है, जिसमें समग्र विकास, मूल्य-आधारित शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, पर्यावरणीय जागरूकता तथा लोकतांत्रिक नागरिकता पर विशेष बल दिया गया है (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 2020, पृ.सं, 6-7)। ये नीतिगत प्राथमिकताएँ विद्यालयी स्तर पर सामाजिक उत्तरदायित्व को एक केंद्रीय शैक्षिक परिणाम के रूप में समाहित करने के लिए एक सुदृढ़ रूपरेखा प्रदान करती हैं। वस्तविकता तो यह कि विद्यालय एवं समाज दोनो ही अपने उत्कृष्टतम् स्वरूप को प्राप्त करने के लिये एक दूसरे पर निर्भर हैं। जब तक विद्यालय और समुदाय में सामंजस्य स्थापित नहिं हो जाता तब तक बच्चे आचरण की शिक्षा ग्रहण नही कर पायेगें (लाल, 2002. पृ.सं, 563)। इसलिये आवश्यक है कि समाज के लिये स्थापित विद्यालय, विद्यार्थीयों को न केवल समाजिक समस्याओ के प्रति जगरूक बनायें अपितु उनको एक जवाबदार सामाजिक सदस्य केरूप मे भी विकसित करें।

प्रपत्र का उद्देश्य एवं पद्धति

यह शोधपत्र विद्यालयी शिक्षा के संदर्भ में सामाजिक उत्तरदायित्व के अर्थ को स्पष्ट करने तथा उसके व्यक्तिगत, विद्यालयीय और व्यापक सामाजिक विकास में महत्व का परीक्षण करने का प्रयास करता है। साथ ही, यह उन शिक्षण-पद्धतियों और संस्थागत प्रथाओं का अन्वेषण करता है, जो विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रभावी संवर्धन में सहायक हो सकती हैं। यह प्रपत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तावित शिक्षा के सामजिक सरोकार से संबंधित सुझावों को धरातल पर उतारने के लिये आव्यूहों की चर्चा करता है, विशेषकर विद्यालयी स्तर पर सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देने के संदर्भ में।

प्रस्तुत प्रपत्र में वैचारिक एवं नीतिगत विश्लेषण पद्धति को अपनाया गया है। यह प्रपत्र सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक एवं चरित्र शिक्षा, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम तथा नागरिक शिक्षा से संबंधित शैक्षिक साहित्य की विश्लेषणात्मक समीक्षा पर आधारित है। इस अध्ययन में कोई अनुभवजन्य आँकड़े के स्थान पर, सैद्धांतिक दृष्टिकोणों और नीतिगत निर्देशों का समेकन कर विद्यालयी शिक्षा में सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए एक एकीकृत रूपरेखा विकसित करने का प्रयास किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सामाजिक उत्तरदायित्व की शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं मानती, बल्कि उसे समाज परिवर्तन की एक सशक्त शक्ति के रूप में देखती है। इसका उद्देश्य ऐसे नागरिक तैयार करना है जो केवल बौद्धिक रूप से ही सक्षम न हों, बल्कि सामाजिक रूप से उत्तरदायी, नैतिक दृष्टि से सजग और संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हों (मानव संसाधन

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-1, अंक-2 अक्तूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

विकास मंत्रालय, 2020, पृ.सं, 6-7)। पूर्ववर्ती नीतियों में जहाँ शिक्षा के विस्तार और पहुँच पर अधिक बल दिया गया था, वहीं यह नीति शिक्षा के मूल उद्देश्यों में नैतिक, सामाजिक और नागरिक उत्तरदायित्व को केंद्र में स्थापित करती है। नीति स्पष्ट रूप से कहती है कि शिक्षा का लक्ष्य चरित्र निर्माण, आलोचनात्मक चिंतन, सहानुभूति, विविधता के प्रति सम्मान और संवैधानिक मूल्यों के प्रति निष्ठा का विकास होना चाहिए। इस प्रकार सामाजिक उत्तरदायित्व को किसी अलग नैतिक पाठ के रूप में नहीं, बल्कि समग्र शिक्षा के अनिवार्य परिणाम के रूप में देखा गया है।

यह नीति नैतिक तर्कशक्ति और मानवीय मूल्यों के संवर्धन पर विशेष बल देती है। यह नीति भारतीय संविधान में निहित न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे मूल्यों के साथ शैक्षिक उद्देश्यों का स्पष्ट सामंजस्य स्थापित करती है। जब इन संवैधानिक मूल्यों को पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों और गतिविधियों में समाहित किया जाता है, तब सामाजिक उत्तरदायित्व शिक्षण-प्रक्रिया का स्वाभाविक हिस्सा बन जाता है। विद्यार्थियों को समावेशन, लैंगिक संवेदनशीलता, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक विविधता के सम्मान जैसे सिद्धांतों को आत्मसात करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

पाठ्यक्रम और शिक्षण-पद्धति में किए गए सुधार सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास में केंद्रीय भूमिका निभा सकते हैं। यह नीति रटंत प्रणाली से हटकर अनुभवात्मक, खोज-आधारित और दक्षता-आधारित शिक्षा पर बल देती है जिसमें समूह में काम करने की महति आवश्यकता पडती है। विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की सामाजिक समस्याओं—जैसे पर्यावरण संरक्षण, सार्वजनिक स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय और सामुदायिक कल्याण—से जोड़ने का प्रयास किये जाने पर बल दिया गया है। इस प्रकार कक्षा में प्राप्त ज्ञान को समाज की वास्तविक चुनौतियों से जोडने का सुझाव दिया गया है।

नीति का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष है कि सामुदायिक सहभागिता और सेवा-अधिगम पर विशेष ध्यान दिया जाए। विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों को सामुदायिक सेवा के एक अंग के रूप में कार्य करने लिए प्रोत्साहित किया गया है। विद्यालयी पाठ्यक्रम में मानवीय मूल्य जैसे सम्मान, सहानुभूति, सशहिष्णुता, मानव अधिकार, लैंगिक समानता, अहिंसा, वैश्विक नागरिकता, समावेशन और समता शामिल को प्रत्यक्षत: जोडने का सुझाव दिया गया है। इसमें विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं, लिंग आधारित पहचान इत्यादि के बारे में अधिक विस्तृत ज्ञान शामिल करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है ताकि विद्यार्थीयों में विविधता के प्रति सम्मान और संवेदशीलता का विकास हो सके (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 2020, पृ.सं, 44)।

राष्ट्रीय शिक्षण नीति 2020 के अनुसार, समावेशन और समानता भी सामाजिक उत्तरदायित्व के महत्त्वपूर्ण स्तंभ हैं। यह नीति सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित वर्गों—जैसे महिलाओं, ग्रामीण समुदायों, आदिवासी समूहों और दिव्यांग विद्यार्थियों—को समान अवसर प्रदान करने की आवश्यकता को स्वीकार करती है। इस प्रकार सामाजिक उत्तरदायित्व केवल विद्यार्थियों के आचरण में ही नहीं, बल्कि शिक्षा व्यवस्था की संरचना में भी परिलक्षित होना चाहिये जिसमे विद्यार्थी स्वत: सामाजिक उत्तरदायित्व की शिक्षा प्राप्त कर सकें। विद्यार्थियों में पारिस्थितिक संवेदनशीलता विकसित करने और भविष्य की पीढ़ियों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए प्राकृतिक उत्पादों का त्यागपूर्ण उपयोग करने के लिये प्रेरित करने की ओर ध्यान दिया गया है।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रभावी क्रियान्वयन में शिक्षक शिक्षा और व्यावसायिक विकास की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। नीति इस बात पर बल देती है कि शिक्षक स्वयं नैतिक आचरण और सामाजिक प्रतिबद्धता के आदर्श प्रस्तुत करें। शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मूल्य-आधारित शिक्षा, समावेशी दृष्टिकोण और सामुदायिक सहभागिता की पद्धतियों को शामिल किया जाने पर जोर दिया गया है। संस्थानों से अपेक्षा की जाती है कि वे विस्तार गतिविधियों, सामुदायिक कार्यक्रमों और सामाजिक रूप से प्रासंगिक अनुसंधान के माध्यम से समाज से सक्रिय संवाद स्थापित करें। संक्षेप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सामाजिक उत्तरदायित्व को शिक्षा का एक मूलभूत उद्देश्य मानती है। इस दृष्टि से सामाजिक उत्तरदायित्व कोई वैकल्पिक तत्व नहीं, बल्कि समग्र शिक्षा का अनिवार्य और केंद्रीय अंग है, जो एक न्यायपूर्ण, सतत और प्रगतिशील समाज के निर्माण की आधारशिला है।

सामाजिक उत्तरदायित्व का संप्रत्यय

सामाजिक उत्तरदायित्व से आशय व्यक्ति की उस क्षमता और तत्परता से है, जिसके माध्यम से वह नैतिक मूल्यों और सामाजिक जागरूकता के आधार पर दूसरों, समाज तथा पर्यावरण के कल्याण के प्रति संवेदनशील रहते हुए जिम्मेदारीपूर्ण आचरण करता है। सामाजिक उत्तरदायित्व का संप्रत्यय, विशेष रूप से किशोरावस्था के विद्यार्थियों के बीच समग्र शिक्षा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक माना जा रहा है जिसमें समाज के व्यापक हित में कार्य करने के लिए व्यक्ति के कर्तव्य को सामिल किया जाता है (Carbonero et al., 2017)। विद्यालयी परिप्रेक्ष्य में सामाजिक उत्तरदायित्व का अर्थ है—अपने सामाजिक दायित्वों को समझना, विविधता का सम्मान करना, सामूहिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता करना तथा समुदाय के समग्र कल्याण में योगदान देना (Berkowitz & Bier, 2005)।

विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों के संदर्भ में सामाजिक उत्तरदायित्व को एक बहुआयामी संकल्पना के रूप में समझा जा सकता है, जिसमें निम्नलिखित आयाम सम्मिलित हैं—

1. व्यक्तिगत उत्तरदायित्व: अपने कार्यों के प्रति जवाबदेही, सत्यनिष्ठा, आत्म-अनुशासन तथा शैक्षणिक जीवन में नैतिक आचरण।

2. अंतरव्यक्तिक उत्तरदायित्व: दूसरों के प्रति सम्मान , सहानुभूति, सहयोग, तथा अहिंसक ढंग से विवाद समाधान की क्षमता।

3. नागरिक उत्तरदायित्व: अधिकारों और कर्तव्यों की समझ, संवैधानिक मूल्यों के प्रति सम्मान तथा लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सहभागिता।

4. पर्यावरणीय उत्तरदायित्व: संसाधनों का सतत एवं विवेकपूर्ण उपयोग, पारिस्थितिक संवेदनशीलता तथा भावी पीढ़ियों के प्रति चिंता।

5. डिजिटल-सामाजिक उत्तरदायित्व: डिजिटल और सोशल मीडिया के क्षेत्र में नैतिक, संयमित और जिम्मेदार व्यवहार।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

ये सभी आयाम नैतिक विकास संबंधी सिद्धांतों (Kohlberg, 1981) तथा समकालीन रूपरेखाओं—जैसे सामाजिक-भावनात्मक अधिगम और सतत विकास हेतु शिक्षा (UNESCO, 2017)—के अनुरूप हैं। इस शोधपत्र की वैचारिक रूपरेखा मुख्यतः तीन आधारों पर निर्मित है।

नैतिक विकास का सिद्धांत, संज्ञानात्मक मनोविज्ञान पर आधारित है, जिसे पियाजे ने प्रस्तावित किया, जबकि नैतिक समाजीकरण सिद्धांत अधिगम मनोविज्ञान से अपने सिद्धांत ग्रहण करता है। संक्षेप में, यह सिद्धांत नैतिकता का निरंतर निर्माण दर्शाता है। इस सिद्धांत के अनुसार जो व्यक्ति आंतरिक या स्वायत्त अनुभव प्राप्त कर चुका है, उसके पास नैतिक मानदंडों एवं मूल्यों की परिपक्व समझ होती है तथा समाज से बच्चे में नैतिक मानदंडों एवं मूल्यों का हस्तांतरण होता है (Colby and Kohlberg, 1987)।

द्वितीय, किशोरावस्था विकास संबंधी सिद्धांत, जो विद्यालयी शिक्षा के दौरान अमूर्त चिंतन और सामाजिक दृष्टिकोण ग्रहण करने की क्षमता में वृद्धि को रेखांकित करता है (Steinberg, 2014)।

तृतीय, चरित्र एवं मूल्य शिक्षा संबंधी अनुसंधान, जो विद्यालयी संस्कृति, आदर्श प्रस्तुत करने तथा अनुभवात्मक अधिगम के महत्व पर बल देता है (Berkowitz & Bier, 2005)।

इस प्रकार सामाजिक उत्तरदायित्व केवल एक नैतिक आदर्श नहीं, बल्कि एक समग्र विकासात्मक प्रक्रिया है, जो विद्यालयी अनुभवों, शिक्षण-पद्धतियों और सामाजिक संदर्भों के माध्यम से क्रमशः विकसित होती है।

विद्यालयी स्तर पर सामाजिक उत्तरदायित्व की शिक्षा का महत्व

प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख उद्देश्यों मे से एक सामाजिक कर्तव्यों के निर्वहन का भी था। विद्यार्थीयो में नागरिक और सामाजिक कर्तव्यों के पालन की भावना भरना, सांस्कृतिक परपराओं को बनाये, रखना, अर्जित संपत्ति का उयोग केवल स्व के लिये न करते हुये उससे समाज के गरीब, वंचित एवं असहायों की सेवा में खर्च करने की प्रेरणा दी जाती थी (अल्तेकर, 2014, पृ. सं. 11)। शिक्षा के इन्ही सामाजिक हेतुओ की पूर्ती की वकालत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं को धरातल पर उतारने के लिये शिक्षकों के साथ ही साथ विद्यार्थीओ को भी उनके सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक बानाना होगा। विद्यालयी स्तर पर सामाजिक उत्तरदायित्व की शिक्षा का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है—

1. सामाजिक व्यक्ति के रूप में महत्व: सामाजिक उत्तरदायित्व विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों के समग्र विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह उनके नैतिक और आचरण संबंधी विकास को सुदृढ़ करता है, क्योंकि इसके माध्यम से विद्यार्थी अपने कार्यों का मूल्यांकन निष्पक्षता, न्याय और सामाजिक परिणामों के आधार पर करना सीखते हैं। जिन विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास होता है, उनमें सहानुभूति, आत्म-नियंत्रण तथा समाजोपयोगी व्यवहार की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है, जो स्वस्थ पारस्परिक संबंधों के लिए आवश्यक है। शोध से यह प्रमाणित हुआ है कि सामाजिक और भावनात्मक दक्षताओं को विकसित करने वाले कार्यक्रम विद्यार्थियों की शैक्षणिक संलग्नता,

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-1, अंक-2 अक्तूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

कक्षा-व्यवहार तथा दीर्घकालिक कल्याण पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं (Durlak et al., 2011)। अतः कहा जा सकता है कि सामाजिक उत्तरदायित्व की सक्रीय शिक्षा शैक्षणिक उपलब्धि के विरोध में नहीं है, बल्कि उसे सशक्त और समृद्ध बनाने का कार्य करता है।

2. विद्यालयी वातावरण के लिए महत्व: एक सामाजिक रूप से उत्तरदायी विद्यार्थी विद्यालय में सकारात्मक और समावेशी वातावरण के निर्माण में योगदान देता है। विविधता के प्रति सम्मान, सहयोगात्मक अधिगम और साझा अनुशासनात्मक मानदंड विद्यालय में उत्पीड़न, भेदभाव और अनुशासनहीनता की घटनाओं को कम करते हैं। जिन विद्यालयों में उत्तरदायित्व और सहभागिता पर बल दिया जाता है, वहाँ कठोर और अधिनायकवादी अनुशासन की अपेक्षा आत्म-नियंत्रण और नैतिक तर्कशक्ति को अधिक महत्व दिया जाता है। इससे विद्यालय एक सुरक्षित, संवेदनशील और सहयोगपूर्ण शिक्षण-परिवेश के रूप में विकसित होता है।

3. समाज और लोकतंत्र के लिए महत्व: सामाजिक उत्तरदायित्व विद्यार्थियों को सक्रिय नागरिक बनने के लिए तैयार करता है। उत्तरदायी किशोर नागरिक गतिविधियों में भाग लेने, लोकतांत्रिक संस्थाओं का सम्मान करने तथा सामाजिक परिवर्तन में रचनात्मक योगदान देने की अधिक संभावना रखते हैं। भारत जैसे बहुलतावादी समाज में सामाजिक उत्तरदायित्व सामाजिक एकता, संवैधानिक नैतिकता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह विद्यार्थियों में अधिकारों और कर्तव्यों के संतुलन की समझ विकसित करता है, जो एक सुदृढ़ लोकतांत्रिक समाज की आधारशिला है।

4. डिजिटल युग में प्रासंगिकता: डिजिटल माध्यमों के विस्तार ने नैतिक चुनौतियों के नए आयाम प्रस्तुत किए हैं, जैसे भ्रामक सूचना, साइबर बुलिंग, निजता का उल्लंघन और ऑनलाइन आचरण की समस्याएँ। इसलिए समकालीन शिक्षा में सामाजिक उत्तरदायित्व का अर्थ केवल प्रत्यक्ष सामाजिक व्यवहार तक सीमित नहीं रह सकता। इसमें डिजिटल नागरिकता और मीडिया नैतिकता को भी शामिल करना आवश्यक है, ताकि विद्यार्थी आभासी संसार में भी जिम्मेदारीपूर्वक और विवेकपूर्ण व्यवहार कर सकें।

अत: विद्यालयी स्तर पर सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास व्यक्तिगत, विद्यालयीय और सामाजिक—तीनों स्तरों पर अत्यंत महत्वपूर्ण है और आधुनिक समय की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा की अनिवार्य आवश्यकता है।

सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास की रणनीतियाँ

विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करने के लिए केवल समय-समय पर नैतिक उपदेश देना पर्याप्त नहीं है। इसके लिए एक सुव्यवस्थित, समग्र और निरंतर प्रयास आवश्यक है। सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्माण पाठ्यक्रम, शिक्षण-पद्धति, विद्यालयी संस्कृति, शिक्षक के व्यवहार तथा मूल्यांकन प्रक्रियाओं के माध्यम से किया जा सकता है।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

निम्नलिखित रणनीतियों का उपयोग करके विद्यार्थीयों में सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति सभानता एवं प्रतिबद्धता का विकास किया जा सकता है-

1. **सामजिक उत्तरदायित्व का पाठ्यक्रम के साथ समेकन (integration)**: सामाजिक उत्तरदायित्व को विकसित करने की आधारभूत रणनीति पाठ्यक्रम समेकन है। अत: पाठ्यक्रम निर्माताओं को सभी विषयों में सामाजिक उत्तरदायित्व से संबंधित दक्षताओं का स्पष्ट समावेश करना चाहिए। सामाजिक मूल्यों को किसी एक अलग 'नैतिक शिक्षा' विषय तक सीमित रखने के स्थान पर उन्हें सभी विषयों में समाहित किया जाना चाहिए। प्रत्येक विषय सामाजिक चिंताओं, नैतिक तर्कशक्ति और नागरिक जागरूकता को विकसित करने के लिए प्रत्यक्षत: या परोक्षत: विशिष्ट अवसर प्रदान करने वाला होना चहिये।

   उदाहरणार्थ, भाषायी विषयों में सामाजिक न्याय, समानता, पर्यावरण संरक्षण या नागरिक कर्तव्यों से संबंधित पाठ शामिल किए जा सकते हैं, जिनके पश्चात चिंतनात्मक चर्चा और रचनात्मक लेखन कराया जा सकता है। सामाजिक विज्ञान स्वाभाविक रूप से लोकतंत्र, नागरिकता, अधिकार एवं कर्तव्य, सामाजिक असमानता और सामुदायिक विकास जैसे विषयों से जुड़ा होता है। विज्ञान शिक्षा पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, सार्वजनिक स्वास्थ्य और प्रौद्योगिकी के जिम्मेदार उपयोग से संबंधित नैतिक प्रश्नों को उठाने का अवसर देती है। यहाँ तक कि गणित में भी सामुदायिक समस्याओं—जैसे सामाजिक कल्याण योजनाओं का बजट, जनसांख्यिकीय आँकड़ों का विश्लेषण या गरीबी और शिक्षा से जुड़े सांख्यिकीय तथ्यों की व्याख्या—को शामिल किया जा सकता है।

   इस प्रकार का अंतर्विषयी समेकन अधिगम को संदर्भपूर्ण और अर्थपूर्ण बनाता है तथा विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता करता है कि शैक्षणिक ज्ञान वास्तविक सामाजिक चुनौतियों से कैसे जुड़ा है। इससे विद्यार्थियों में धीरे-धीरे मूल्य-आधारित दृष्टिकोण विकसित होता है, जहाँ शैक्षणिक अधिगम और सामाजिक उत्तरदायित्व एक-दूसरे को सशक्त करते हैं।

2. **अनुभवात्मक अधिगम और सेवा-अधिगम:** अनुभवात्मक अधिगम, विशेषकर सेवा-अधिगम, सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करने की अत्यंत प्रभावी रणनीति है, क्योंकि इसमें विद्यार्थी प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक समस्याओ से परिचित होते हैं तथा वास्तविक परिस्थितियों में काम करते हैं। सेवा-अधिगम में सामुदायिक सेवा को शैक्षणिक उद्देश्यों और वास्तविक परिस्थियों मे चल रहे सेवा के कार्यों से जोड़ा जाता है, जिससे विद्यार्थीयों को वास्तविक अनुभव, सीख और नैतिक दृष्टीकोण प्राप्त हो सके।

   उदाहरण के लिए, विद्यार्थी स्वच्छता अभियान, साक्षरता कार्यक्रम, वृक्षारोपण, वृद्धाश्रम भ्रमण या स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी जागरूकता अभियानों में भाग ले सकते हैं। जब इन गतिविधियों को कक्षा में पढ़ाए जा रहे विषयों से जोड़ा जाता है—जैसे पर्यावरण विज्ञान के पाठ को वृक्षारोपण अभियान से जोड़ना, विद्यार्थीयों में सामाज एवं पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व की सीख देने एवं उपयोगिता को समझने में सहाय है। डायरी लेखन, समूह चर्चा और

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

नाट्य प्रस्तुति जैसी चिंतनात्मक गतिविधियाँ विद्यार्थियों को अपने अनुभवों का विश्लेषण करने में सहायता करती हैं।

अनुभवात्मक अधिगम का मुख्य पहलू यह है कि यह विद्यार्थियों को नैतिक उपदेश के निष्क्रिय श्रोता के स्थान पर समाज के सक्रिय सहभागी में परिवर्तित कर देता है। इससे सहानुभूति, नागरिक प्रतिबद्धता, समस्या-समाधान कौशल और जवाबदेही की भावना विकसित होती है, जो सामाजिक उत्तरदायित्व के आवश्यक घटक हैं।

3. **सहभागितापूर्ण शिक्षण-पद्धति:** शिक्षकों को सहभागितापूर्ण और अनुभवात्मक शिक्षण-पद्धतियाँ अपनानी चाहिए, जिससे विद्यार्थी उत्तरदायित्व का अभ्यास कर सकें। सहभागितापूर्ण शिक्षण-पद्धति में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी पर बल दिया जाता है। सहयोगात्मक अधिगम, समूह परियोजनाएँ, वाद-विवाद, भूमिका-अभिनय, सिमुलेशन तथा नैतिक मुद्दों पर चर्चा जैसी रणनीतियाँ विद्यार्थियों को विविध दृष्टिकोणों से परिचित कराती हैं और अधिगम के परिणामों की जिम्मेदारी साझा करने के लिए प्रेरित करती हैं।
   उदाहरणस्वरूप, लैंगिक समानता या पर्यावरण संरक्षण जैसे सामाजिक मुद्दों पर समूह परियोजना विद्यार्थियों को टीम मे काम करना, पारस्परिक सहयोग करना, भूमिकाओं का निर्धारण करना, विभिन्न विचारों का सम्मान करना और सामूहिक निर्णय तक पहुँचना सिखाती हैं। नैतिक मुद्दों पर कक्षा में वाद-विवाद विद्यार्थियों की आलोचनात्मक चिंतन क्षमता और नैतिक तर्कशक्ति को विकसित करता है, साथ ही उन्हें सम्मानपूर्वक सुनना और रचनात्मक ढंग से अपनी बात रखना भी सिखाता है।
   इस प्रकार की शिक्षण-पद्धति विद्यार्थियों को लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रत्यक्ष अनुभव कराती हैं। वे केवल सहयोग, सहिष्णुता और न्याय के बारे में पढ़ते नहीं, बल्कि उन्हें कक्षा की गतिविधियों में जीते हैं। इससे सामाजिक उत्तरदायित्व एक सजीव अनुभव बन जाता है।

4. **विद्यालयी संस्कृति और संस्थागत व्यवहार:** सामाजिक रूप से उत्तरदायी विद्यालयी संस्कृति विद्यार्थियों के व्यवहार को गहराई से प्रभावित करती है। अत: विद्यालय नेतृत्व को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप लोकतांत्रिक और समावेशी विद्यालयी संस्कृति विकसित करनी चाहिए। विद्यालय की नीतियाँ, दैनिक गतिविधियाँ और प्रशासनिक व्यवहार अक्सर औपचारिक पाठों से अधिक प्रभावशाली होते हैं। जो विद्यालय लोकतांत्रिक संचालन, समावेशन, पर्यावरण चेतना और नैतिक अनुशासन को बढ़ावा देते हैं, वे सामाजिक अधिगम के लिए प्रामाणिक संदर्भ निर्मित करते हैं।

   उदाहरण के लिए, छात्र परिषद या विद्यालय संसद सहभागितापूर्ण निर्णय-निर्माण, नेतृत्व विकास और जवाबदेही के अवसर प्रदान करती है। दंडात्मक अनुशासन के स्थान पर संवाद-आधारित विवाद समाधान या सहपाठी मध्यस्थता जैसी प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों में जिम्मेदारी, सहानुभूति और आत्म-चिंतन की भावना विकसित करती हैं। सांस्कृतिक विविधता के उत्सव सामाजिक सम्मान और सौहार्द को बढ़ाते हैं। जब संस्थागत व्यवहार नैतिक सिद्धांतों के अनुरूप होता है, तो विद्यार्थी सामाजिक उत्तरदायित्व को स्वाभाविक और अपेक्षित व्यवहार के रूप में आत्मसात करते हैं।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

5. **शिक्षक की भूमिका और व्यावसायिक विकास:** सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास में शिक्षक की भूमिका केंद्रीय है, क्योंकि विद्यार्थी मूल्यों को प्रायः अनुकरण के माध्यम से सीखते हैं। शिक्षक की निष्पक्षता, सहानुभूति, सत्यनिष्ठा और विविधता के प्रति सम्मान, सामाजिक संगठन के कार्यों में भागीदारी, विद्यार्थियों के नैतिक विकास को गहराई से प्रभावित करते हैं।

   व्यक्तिगत आचरण के अतिरिक्त, शिक्षकों को सामाजिक-भावनात्मक अधिगम, अनुभवात्मक शिक्षण, समावेशी शिक्षा और चिंतनात्मक पद्धतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए व्यावसायिक रूप से सक्षम होना चाहिए। नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को सामाजिक मुद्दों की समझ, सहभागितापूर्ण विधियों के प्रयोग और विविधता के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाने में सहायता करते हैं।

   इस रणनीति का तात्पर्य यह है कि शिक्षक-प्रशिक्षण और सतत व्यावसायिक विकास केवल शैक्षणिक ही नहीं, बल्कि नैतिक उत्तरदायित्व भी हैं। एक सामाजिक रूप से उत्तरदायी शिक्षक केवल ज्ञान का संप्रेषक नहीं होता, बल्कि वह विद्यार्थियों के नैतिक और नागरिक व्यक्तित्व को आकार देने वाला मार्गदर्शक होता है।

6. **सामाजिक उत्तरदायित्व का मूल्यांकन:** सामाजिक उत्तरदायित्व का मूल्यांकन एक विशिष्ट चुनौती प्रस्तुत करता है, क्योंकि मूल्यों और दृष्टिकोणों को केवल पारंपरिक परीक्षाओं के माध्यम से मापा नहीं जा सकता। इसलिए मूल्यांकन की प्रक्रिया में समग्र अंकों की अपेक्षा सतत, चिंतनात्मक और गुणात्मक दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

   विद्यार्थी पोर्टफोलियो, आत्म-मूल्यांकन सूची, सहपाठी प्रतिक्रिया, चिंतनात्मक डायरी तथा वर्णनात्मक प्रतिवेदन जैसे उपकरण विद्यार्थियों के क्रमिक विकास को समझने में सहायक होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी विद्यार्थी के पोर्टफोलियो में सामुदायिक परियोजनाओं में सहभागिता, नैतिक दुविधाओं पर चिंतन और सहयोगात्मक कार्य के प्रमाण सम्मिलित हों, तो इससे सामाजिक उत्तरदायित्व के वास्तविक विकास का आकलन किया जा सकता है।

   ऐसी मूल्यांकन पद्धतियाँ प्रतिस्पर्धा या नैतिक लेबल लगाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के बजाय आत्म-जागरूकता और निरंतर सुधार की भावना को प्रोत्साहित करती हैं। विद्यार्थी सामाजिक उत्तरदायित्व को किसी स्थिर गुण के रूप में नहीं, बल्कि एक निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया के रूप में देखने लगते हैं।

7. **सामाजिक-भावनात्मक अधिगम का समेकन:** सामाजिक-भावनात्मक अधिगम विद्यार्थियों में आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, भावनात्मक नियंत्रण और जिम्मेदार निर्णय-निर्माण की क्षमता विकसित करता है। सामाजिक मुद्दाओं के प्रति सजग रहेने का अभ्यास, भावनात्मक चिंतन तथा सहानुभूति विकास संबंधी गतिविधियाँ नैतिक संवेदनशीलता और आचारयुक्त व्यवहार को सुदृढ़ करती हैं।

8. **परिवार और समुदाय की साझेदारी:** विद्यालयों को परिवारों और सामुदायिक संगठनों के साथ सहयोग स्थापित करना चाहिए, ताकि सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना कक्षा के बाहर भी सुदृढ़ हो सके। विद्यालयी पहलों में अभिभावकों की भागीदारी और गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) के साथ साझेदारी विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
ISSN : 3108-0294
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

के अनुभव प्रदान करती है और मूल्यों की निरंतरता सुनिश्चित करती है। विद्यालय, परिवार और समुदाय के बीच साझा उत्तरदायित्व मूल्य-शिक्षा की सुसंगति बनाए रखता है तथा उसके दीर्घकालिक प्रभाव को सशक्त बनाता है।

9. **डिजिटल नागरिकता की शिक्षा:** डिजिटल युग में सामाजिक उत्तरदायित्व का विस्तार ऑनलाइन व्यवहार तक भी होता है। प्रौद्योगिकी के नैतिक उपयोग, मीडिया साक्षरता, साइबर सुरक्षा तथा सम्मानजनक ऑनलाइन संवाद की शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। डिजिटल नागरिकता की शिक्षा विद्यार्थियों को आभासी परिवेश में जिम्मेदारीपूर्वक व्यवहार करने के लिए तैयार करती है, जो आज के सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

10. **विद्यार्थी को अभिव्यक्ति और नेतृत्व का अवसर प्रदान करना:** विद्यार्थी-नेतृत्व वाली पहलों को प्रोत्साहित करना तथा विद्यालयी निर्णयों में विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति का अवसर देने से विद्यार्थीयों में उत्तरदायित्व और नेतृत्व की भावना का विकास होता है। नेतृत्व के अवसर विद्यार्थियों को विद्यालय और समुदाय स्तर पर सामाजिक परिवर्तन की पहल करने के लिए सशक्त बनाते हैं। जब विद्यार्थियों को अपनी भूमिका का अनुभव होता है, तो उनमें सामाजिक उत्तरदायित्व और नागरिक सहभागिता के प्रति आजीवन प्रतिबद्धता विकसित होती है।

समग्र रूप से ये सभी रणनीतियाँ दर्शाती हैं कि सामाजिक उत्तरदायित्व का सर्वोत्तम विकास समेकन, सहभागिता, अनुभव, चिंतन और संस्थागत सहयोग के माध्यम से होता है। जब विद्यालय समग्र और शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाते हैं, तब सामाजिक उत्तरदायित्व एक स्थायी मूल्य के रूप में विकसित होता है, जो विद्यार्थियों के व्यक्तिगत, शैक्षणिक और नागरिक जीवन का मार्गदर्शन करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्पष्ट रूप से शिक्षा को ऐसे "उत्तम मानव" के निर्माण का माध्यम मानती है, जिनमें नैतिक मूल्य, सहानुभूति और सामाजिक प्रतिबद्धता की भावना हो।

उपसंहार

विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास नैतिक नागरिकता, सामाजिक सौहार्द और सतत विकास की मजबूत आधारशिला है। इसका प्रभावी विकास तभी संभव है, जब इसे पाठ्यक्रम, शिक्षण-पद्धति, विद्यालयी संस्कृति और सामुदायिक सहभागिता में समाहित किया जाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सामाजिक उत्तरदायित्व को शिक्षा के केंद्रीय परिणाम के रूप में संस्थागत रूप देने के लिए एक व्यापक नीतिगत रूपरेखा प्रदान करती है। यदि इसे विचारपूर्ण ढंग से और निरंतर प्रतिबद्धता के साथ लागू किया जाए, तो विद्यालयी शिक्षा सामाजिक रूप से उत्तरदायी, जागरूक और राष्ट्र निर्माण में सार्थक योगदान देने वाले नागरिकों का निर्माण कर सकती है।

संदर्भ सूची-

Berkowitz, M. W., & Bier, M. C. (2005). What works in character education: A research-driven guide for educators. Character Education Partnership.

Carbonero MA, Martín-Antón L J, Otero L and Monsalvo E. (2017). Program to Promote Personaland Social Responsibilityin the Secondary Classroom. *Frontiers in Psychology.*

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

8:809.doi: 10.3389/fpsyg.2017.00809 retrieved from, https://www.frontiersin.org/journals/psychology/articles/10.3389/fpsyg.2017.00809/full

Colby, A., and Kohlberg, L. (1987). *The Measurement of Moral Judgment: Theoretical Foundations and Research Validation*, Vol. 1. New York, NY: Cambridge University Press.

Government of India. (2020). *National Education Policy 2020(Hindi Version)*. Ministry of Education.

Kohlberg, L. (1981). The philosophy of moral development: Moral stages and the idea of justice. Harper & Row.

Steinberg, L. (2014). Age of opportunity: Lessons from the new science of adolescence. Houghton Mifflin Harcourt.

अल्तेकर, ए.एस. (2014), प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, वारणसी: अनुराग प्रकाशन.

लाल, आर.बी. (2002), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, मेरठ: रस्तोगी पब्लिकेशन.